ISSN No. 2583-3316

डेज़ी की खेती की तकनीक

अंकिता शर्मा[1]* एवं मनोज कुमार अहिरवार[2]

[1]रिसर्च स्कॉलर, उद्यान विज्ञान विभाग, एवं [2]प्रमुख कृषि विज्ञान केंद्र, दमोह

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर

पत्राचारकर्ता : ankitasharma199511.as@gmail.com

परिचय

डेज़ी पुष्प मासूमियत व पवित्रता का प्रतीक माना जाता है। इसे गुलबहार, कॉमन डेज़ी (common daisy), लान डेज़ी (lawn daisy) या इंग्लिश डेज़ी के नाम से भी जाना जाता है। यह **ऐस्टरेसिए (asteraceae)** ऐसे परिवार से ताल्लुक रखता है। डेज़ी के फूल उत्तर और मध्य यूरोप के मूल निवासी हैं । इसका शाब्दिक अर्थ दिन की आँख यानी देसाई भी होता है। यह फूल भोर होने के साथ खुलना शुरू होता है। डेज़ी पुष्प में कई औषधीय आयुर्वेदिक गुण भी पाए जाते हैं।

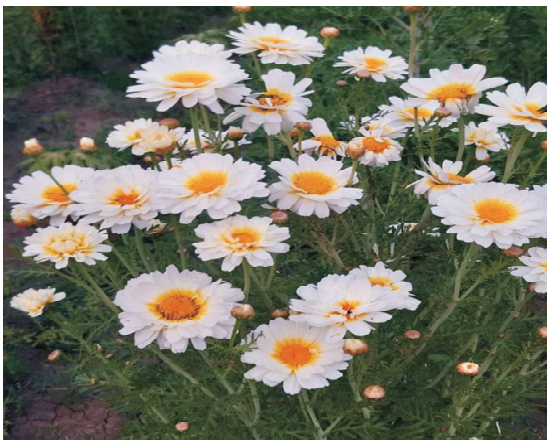

गुलबहार फूल की जानकारी

डेज़ी एक बहुवर्षीय सदाबहार पौधा है, जो कि खूबसूरत व खुशबूदार होते हैं। गुलबहार के फूल की करीब 4,000 प्रजातियाँ पूरी दुनिया में पाई जाती है। यह फूल केवल अंटार्कटिका महाद्वीप पर नहीं मिलता। इसे पनपने के लिए सूरज की रोशनी आवश्यक है। डेज़ी का पौधा करीब 3 से 5 फीट तक बढ़ता है। इसकी पत्तियाँ बारहमासी गहरे हरे रंग की होती हैं। पतियों का आकार प्रजाति के अनुसार अलग होता है तथा उन पर हलके रोए पाए जाते हैं। पत्तियाँ, रोसेट बनाते हैं। इसकी पत्तियाँ स्पुतुल या कोवेंट आकार की होते हैं। इसका तना चिकना होता है तथा पत्तियों से रहित होता है और एकल फूल का समर्थन करता है। पत्तियाँ नोकदार, सुस्त, उन्मत्त, बेसल होती हैं तथा ऊपरी हिस्से पर फूल उगता है। डेज़ी के पौधे के डंठल पतियों की तुलना में ज्यादा बड़े होते हैं।

ग्लोरियोसा डेजी

शास्ता डेज़ी

क्राउन डेजी

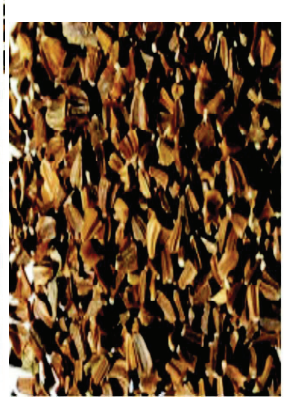

गोरलैंड डेजी

डेज़ी के मुख्य प्रजातियों के बीज

डेज़ी के पुष्पक्रम को कैपिट्यूलम (capitulum) के रूप से जाना जाता है । गुलबहार के फूल का केंद्र फ्लोरल डिस्क कहलाता है, जो पीले रंग का होता है, जिसमें कई छोटे फूल होते हैं, जो फ्लोरेटस कहलाते हैं और पंखुड़ियों का निर्माण करते हैं। डेज़ी पुष्प की परागणकर्ता मधुमक्खियाँ, तितलियाँ व

ISSN No. 2583-3316

अन्य कीट पतंगे होती है। यह फूल दो प्रकार से बने होते हैं इनकी पंखुड़ियों के आधार पर इन्हें डिस्क फ्लोरेन्ट और सफेद किरण फ्लोरेंट में बाँटा गया है। यह पुष्प सफेद, पीला एवं गुलाबी रंग में देखने को मिलता है। इसकी पंखुड़ियाँ पतली व कम चौड़ाई की होती हैं। डेज़ी के पुष्प को मिश्रित संयंत्र कहा जाता है। यह फूल केवल दिन में ही खिलता है इसीलिए 'दिन की आँख' भी कहते हैं। शाम के वक्त इसकी पंखुड़ियाँ बंद हो जाती हैं। फूलों की संरचना के अनुसार डेज़ी, बटन, बुबोस के रूप में ईख और ट्यूबलर हो सकते हैं। फूल का उपयोग समूह रोपण के लिए परिदृश्य डिजाइन में और ग्रीनहाउस या बालकनी संयंत्र के रूप में किया जाता है। डेज़ी पुष्प के केन्द्र में मादा फूल होता है और इसमें कोई पंखुड़ी नहीं होती है। डेजी पुष्प गेंद केभोमाइल पॉम पॉम एवं गुलाब के रूप में पाया जाता है। पंखुड़ियाँ रंग धारियों एवं धब्बों के साथ होती हैं, जिन्हें मोनोग्राम कहा जाता है। सफेद से चमकीले लाल रंग के विभिन्न रंगों में यह पुष्प पाया जाता है।

इसकी फूल और पत्तियाँ सलाद और सूप के रूप में खायी जाती है। इसमें विटामिन सी अधिक मात्रा में पाया जाता है । इससे कई प्रकार की हर्बल दवाइयाँ भी बनायी जा सकती हैं। गुलबहार का पौधा केवल 2 वर्ष तक ही रहता है।

मुख्य प्रजातियाँ

गुलबहार की मुख्य प्रजातियों में शास्ता डेज़ी, अफ्रीकन डेज़ी, पेंटेड डेज़ी, लेजी डेज़ी, इंग्लिश डेज़ी, ब्लू डेज़ी, लेजी डेज़ी, माइकलमास डेज़ी, टैटेरियन डेज़ी, पेरिस डेज़ी, एवं क्राउन डेज़ी शामिल हैं।

जलवायु

गुलबहार के पुष्प को शीतकालीन और ग्रीष्मकालीन ऋतुयें पसंद होती हैं। गर्मी के मौसम में यहाँ धूप और छाया दोनों में अच्छी बढ़वार करता है। इस पौधे को लगाने का उत्तम समय वसंत ऋतु का होता है। यह पुष्प ठंड प्रतिरोधी है।

खेती के लिए मृदा

गुलबहार की खेती के लिए दोमट या मटियार दोमट मृदा सर्वोत्तम होती है, जिसमें उचित जल निकास की व्यवस्था हो। डेज़ी रोपण के लिए मृदा में पर्याप्त मात्रा में कार्बन पदार्थ होना आवश्यक है।

मृदा को समतल करने हेतु एक दो बार हल या कल्टीवेटर से जुताई करके पाटा चलाकर उसे भुरभुरा बनाकर एवं कंकड़ पत्थर को चुनकर बाहर निकाल दिया जाता है।

खाद एवं उर्वरक

अच्छी उपज के लिए खेत की तैयारी से पहले 50 क्विंटल कंपोस्ट प्रति हेक्टेयर की दर से मृदा में मिलाया जाता है। नाइट्रोजन की आधी मात्रा एवं फास्फोरस और पोटाश की पूरी मात्रा खेत की अंतिम जुताई के समय मृदा में मिलाई जाती है। नाइट्रोजन की शेष आधी मात्रा पौधरोपण के 25 से 30 दिनों के अंदर प्रयोग किया जाता है। पुष्प खिलने के ठीक पहले फॉस्फोरस को उच्च मात्रा में प्रयोग किया जाता है ताकि बड़े एवं उज्जवल खिले हुए फूल प्राप्त हो सके। एक मौसम में दो बार खाद देना आवश्यक है।

प्रसारण

गुलबहार का प्रसारण बीज एवं राइजोम कटिंग दोनों ही विधियों से होता है। इसके बीजों को नवंबर या दिसंबर महीने में लगाया जाता है। डेज़ी के बेहतर फूल उगाने के लिए बगीचे में या ग्रीन हाउस में बेहतर बीज लगाए जा सकते हैं। गुलबहार रोपण से पहले बिस्तर को सिक्त किया जाना चाहिए। जमीन को समतल करना चाहिए और इसे थोड़ा सा नम करना चाहिए ताकि बीज बहुत गहरा न हो। डेज़ी बोने के लिए छेद गहरा नहीं होना चाहिए। इन बीजों से पौधा निकलने में लगभग 2 सप्ताह का समय लगता है। डेज़ी के फूल को कटिंग से लगाने के लिए ऐसी कटिंग चुनी जाती है जिसके ऊपर फूल ना हो तथा उसकी लंबाई 5 से 6 इंच होती है। इसे 500 वर्ग मीटर के बीच सैया में तैयार किया जा सकता है जहां बीच की गहराई 1 सेंटीमीटर से अधिक ना हो। यदि कटिंग द्वारा डेज़ी का प्रसारण किया जाता है तो इसमें कटिंग नए स्वस्थ पौधे से भी जाती है इस कटिंग पर रूटेक्स लगाकर बालू से भरी ट्रे में लगाया जाता है। कटिंग में लगभग 1 से 2 महीने में जड़े निकलना शुरू होती हैं जिसके बाद इन्हें ट्रांसप्लांट किया जाता है। 1,000 स्क्वायर मीटर में 3,500 पौधे लगाए जा सकते हैं। डेज़ी की पंक्तियों के बीच में 5 सेंटीमीटर की दूरी होनी चाहिए। बीज बोने के बाद पानी देना आवश्यक है ताकि जमीन में नमी बनी रहे।

सिंचाई

खेत की नमी को देखते हुए 5 से 10 दिन के अंतराल में गुलबहार में सिंचाई की जा सकती है। फूल की जड़ पतली होती हैं इससे वह जल्दी सूख जाते हैं। अतः इसमें नियमित रूप से पानी देना आवश्यक है। गर्म मौसम में एक बार तथा उसके बाद सप्ताह में तीन बार सिंचाई करना चाहिए। अधिक

ISSN No. 2583-3316

मात्रा में सिंचाई होने पर फफूँद रोग लगने की संभावना होती है। ठंड के मौसम में सर्दियों से सुरक्षा प्रदान करने हेतु पौधे को गीली घास की एक मोटी परत चढ़ाई जाती है। अतिरिक्त नमी पुष्प के लिए हानिकारक हो सकती है क्योंकि वह जड़ को सड़ा सकती है।

कीट एवं रोग प्रबंधन

आमतौर पर के कीट या बीमारी से डेज़ी को कोई परेशानी नहीं होती है। एफिड से नुकसान पहुँच सकता है। जिसके रोकथाम के लिए मैलाथियान 0.1% का छिड़काव किया जाता है। ग्रे सड़ांध, जंग, ख़स्ता फफूँदी हो सकता है। पौधा कृन्तकों और कीड़ों सेमी पौधों को भी नुकसान पहुँचा सकता है। खराब पौधों को हटा देना चाहिए तथा मिट्टी को कीटाणु रहित कर देना चाहिए

फूल की तुड़ाई

फूल की तुड़ाई साधारणतः सायं काल में होती है। फूल को डंठल के साथ तोड़ना श्रेयस्कर होता है। डी हेडिंग की प्रक्रिया से फूल की संख्या एवं उपज में वृद्धि की जा सकती है। डेज़ी प्रचुर मात्रा से लंबे समय तक फूल दे, तो समय-समय पर खिलने वाले फूलों को हटा दें। यह प्रक्रिया पौधे को नए फूल देने के लिए प्रोत्साहित करती है।

उपज

डेजी के खेत से 80-120 क्विंटल फूल प्रति हेक्टेयर प्राप्त की जा सकती है।

निष्कर्ष

डेजी के जंगली रूप को 'वार्षिक डेज़ी' या 'मोती' कहा जाता है। बारहमासी डेज़ी का उपयोग फूलों के बेड, बालकनियों

में समूह के रोपण में, अलग-अलग कंटेनरों में किया जाता है। जो दो समूहों वार्षिक या बारहमासी समूहों में विभाजित है। डेज़ी फूला एस्ट्रो परिवार में शामिल, विभाजित है। वार्षिक डेज़ी का उपयोग रहने वाले स्थानों को सजाने के लिए किया जाता है। बारहमासी फूलों को बगीचों में लगाया जाता है। सजावटी डेज़ी की लोकप्रिय किस्म रोबेला, हैबेरा, टैसो, बेलडासी है।

संदर्भ

- https://www.google.com/url?sa=t&source=web&rct=j&url=https://fondeco.ru/hi/margaritka-vyrashchivanie-iz-semyan-kogda-sazhat-margaritki-mnogoletnie/&ved=2ahUKEwio4YSvrZP2AhXeS2wGHS7PDOgQFnoECAMQAQ&usg=AOvVaw1hfzSC7SiRoQ0YgKOdP3Op
- https://www.nurserygyan.com/daisy-flower-information-in-hindi/

❖❖